

"आत्मानं सततं रक्षेत्।"
अर्थ - आत्मा की सर्वदा रक्षा करनी चाहिए।

अंदर पढ़ें

श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी की लेखनी से

- सच्चे और झूठे धर्म साधन

अतीत के झरोखे से

- प्राणधारी सारा जगत एक है
- जीवन प्रसंग
- गुरु की महिमा के विषय में

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र - 5

- श्रद्धेया कुमारी डाक्टर प्रेमदेवी जी
- श्रद्धेया कुमारी प्रेम देवी जी के संबंध में गीत

सितंबर अंक का शेष

- श्रद्धेय श्रीमान बख्शी रत्न चन्द जी जौहर

स्वजाति के संबंध में व्रत (15 अक्तूबर) पर विशेष

- अपने जाति के जनों को...(परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित गीत)
- हमारी जाति में मिथ्या कुल भेद
- हिन्दुओं की प्राचीन सभ्यता
- हिन्दुओं में जातिवाद
- भौतिक जगत् के संबंध में एक जन ने ऐसा देखा है हमारे भगवान देवात्मा का देव रूप

देव समाज ग्लोबल सामाजिक समाचार

- सत्यधर्म बोध उत्सव

बच्चों का कॉर्नर

- भगवान देवात्मा के जीवन से - 4
- एक नेवले और जट्टी की कहानी
- मज़ेदार बूझो तो जानें (पहेलियां)
- ज़रा हंस लो खिलखिलाकर (चुटकुले)

गुरु की महिमा के विषय में

सद्गुरु के बिना कुछ भी ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती, और अज्ञान सागर के प्रवाह में प्राणी बहे चले जाते हैं। **1**

जैसे आंखों में अंजन डालने से इस पृथ्वी के नाना द्रव्य दिखाई देने लगते हैं, वैसे हि सद्गुरु के उपदेश के द्वारा अन्तर जगत् के ज्ञान का प्रकाश होता है। **2**

सद्गुरु लाभ के बिना जन्म निष्फल है, सद्गुरु के बिना इस संसार में दुख ही दुख प्राप्त होता है, जब तक सद्गुरु प्राप्त न हों तब तक हृदय का अन्धकार और उसकी आशा ही नहीं मिटती। **3**

जिसे अपनी ऐसी अवस्था से उद्धार पाने की अभिलाषा हो, वह सद्गुरु की शरण ले; सद्गुरु के बिना ऐसी नीच अवस्था से उद्धार पाना कल्पना के द्वारा भी सम्भव प्रतीत नहीं होता। **4**

पृष्ठ 4 का शेष

प्राणधारी सारा जगत् एक है।

जिन अधिकारी आत्माओं ने प्राणहीन और प्राण विशिष्ट जगत् और प्राण शक्ति के नाना प्रकाशों और रूपों के विषय में श्री देवगुरु जी की वैज्ञानिक शिक्षा को लाभ करने का महोच्च अधिकार लाभ किया है, वह जहां उपरोक्त अनुसंधान से विशेष हर्ष लाभ कर सकते हैं, वहां अपने परम ज्ञानी, तत्वज्ञान प्रदर्शक सद्गुरु की महानता और उन की सत्य शिक्षा की विशेषता को भी उपलब्ध कर सकते हैं।

पृष्ठ 22 का शेष

हिन्दुओं में जातिवाद

प्रकाश नहीं करता? यदि तुम में से किसी का बाप अपने आप को तेली वा तरख़ान वा सुनार वा लोहार कहता था, तो वह तेली, तरख़ान, सुनार, और लुहार का व्यवसाय भी करता था- वह उन पेशों के काम को जानता था और करता था। परन्तु तुम्हारी अवस्था क्या है? तुम वह पेशे नहीं करते, किंतु उनसे भिन्न और व्यवसाय करते हो, परन्तु फिर भी वकील होकर, डिप्टी होकर, मुन्सिफ होकर झूठ मूठ अपना ऐसा व्यवसाय बतलाते हो, कि जो तुम नहीं करते और जिस के बतलाने में तुम बहुत कुछ लज्जा भी करते हो। हंसी हो चुकी और अब तुम गंभीर भाव के साथ अपनी अवस्था पर विचार करो और मेरे उपदेश से जिस उत्तम सत्य को शिक्षा मिलती है, उसे ग्रहण करो, अर्थात् जो कुछ तुम सच मुच हो, वही बतलाओ। झूठ कुछ न कहो। ज्ञानदेव के आगे सबने अपने अपने सिर झुकाए और विनय पूर्वक पूछा कि फिर हम लोग अपने आपको क्या बतलाया करें। इस पर ज्ञानदेव ने कहा कि तुम अपने आप को झूठ मूठ तेली, सुनार और तरख़ान आदि कहने के स्थान में केवल हिंदु बतलाओ, इस से अधिक और कुछ नहीं। अच्छा अब सभा भंग। आगे फिर कभी मिलने पर इसी प्रकार की कोई और शिक्षा देंगे।

(सभा भंग हुई और सब अपने अपने घरों को गए)

धर्म जीवन

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

खण्ड 32 अंक 10
अक्तूबर - 2021
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी की लेखनी से

सच्चे और झूठे धर्म साधन

18 अगस्त की प्रात: काल सत्संग की सभा में श्री देवगुरु जी भगवान् ने यह तत्व प्रगट किया, कि जहां साधारण जन केवल किसी गीत के गान, किसी स्तोत्र वा पुस्तक के पाठ अथवा किसी मन्त्र के जाप को ही धर्म का साधन समझते हैं, और ऐसा करके संतुष्ट रहते हैं, वहां तुम्हें इस प्रकार के साधन से तृप्ति नहीं पानी चाहिए। तुम जब कोई साधन करो, तो अपने भीतर विचार पूर्वक इस प्रकार प्रश्न करो कि: -

(1) मैं यह साधन किस के संबंध में करता हूं? (2) किस उद्देश्य के सिद्ध करने के लिए करता हूं? (3) जिस उद्देश्य के सिद्ध करने के लिए करता हूं, क्या उस से वह उद्देश्य सिद्ध हो सकता है? (4) इस साधन से वह उद्देश्य अब तक कहां तक सिद्ध हुआ है?

इन प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर पाने के बिना तृप्त नहीं होना चाहिए। फिर इस विषय में उन्होंने मनुष्य सृष्टि के बड़े बड़े जनों और नाना सम्प्रदायों के नेताओं की तुलना में अपनी यह विशेषता प्रगट की कि जहां वह धर्म के नाम से अनेक प्रकार की क्रियाएं करके कभी यह प्रश्न तक नहीं करते, कि वह जो साधन, भजन आदि करते हैं वह किस उद्देश्य के पूरा करने के लिए करते हैं और उससे वह उद्देश्य कहां तक पूरा होता है, वहां उस के विरुद्ध हम सदा हकीकत को देखते आए हैं और जहां किसी साधन से वास्तव में कोई लाभ होता नहीं देखते, वहीं उस साधन को वह चाहे किसी नाम से हो छोड़ देते रहे हैं। दृष्टान्त के तौर पर बाबा नानक ने एक जगह लिखा है, "सुणिया दुख पाप का नाश" अर्थात् (ईश्वर का नाम) सुनने से ही दुख और पाप का नाश हो जाता है। अब हज़ारों जन इस का प्रति दिन पाठ करते हैं, परन्तु उसे प्रति दिन पाठ करके उनमें से कोई कभी यह प्रश्न तक नहीं करता है, कि क्या ईश्वर का नाम जपने वा सुनने से पापों का नाश होता है? और जो लोग ईश्वर का नाम सुनते वा सुनाते हैं, वह पापी नहीं हैं? कोई इस सत्य की ओर ध्यान नहीं देता, कि जब इसके पाठ वा श्रवण से हमारे पाप दूर नहीं होते, तो हम इसे क्यों बराबर पाठ करते रहें। हमने इस महा सत्य को देखा है और इसीलिए जिस साधन वा विश्वास से कोई लाभ नहीं देखते, उसे जारी रखना नहीं चाहते। तुम सब भी इस सत्य को उपलब्ध करो, और केवल गाने के लिए कोई भजन वा गीत न गाओ, केवल पाठ करने के लिए किसी पुस्तक वा स्तोत्र आदि का पाठ न करो, केवल जप के लिए कोई मन्त्र न जपो, किन्तु जब साधन के लिए बैठो तो पहले विचार पूर्वक यह परीक्षा करो, कि मैं इस समय किस के संबंध में साधन करता हूं? और किस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए करता हूं? मेरा साधन ठीक होता है या नहीं? यदि ठीक

होता है, तो उस से मेरा उद्देश्य सम्बन्धी फल पैदा होता है या नहीं? इस प्रकार यदि तुम सत्य भाव के साथ अपने साधन करो, तो थोड़े काल में ही अपने जीवन में बहुत बड़ा शुभ परिवर्तन देख सकते हो और यदि साधन करते समय उपरोक्त सत्यों की ओर ध्यान न दो, तो चाहे जितने काल तक साधन करते रहो, तुम्हारा सारा परिश्रम निष्फल जाएगा। इस अति मूल्यवान् और जीवनदायक उपदेश से मेरे भीतर साधन करने के संबंध में एक नई दृष्टि उत्पन्न हो गई और मैंने देखा, कि इस ज्योति के बिना मैं अनेक बार ऐसे साधन करता हूं, कि जो कोई उच्च फल उत्पन्न नहीं करते रहे, मैंने आगामी काल में इस महा हितकर तत्व को सम्मुख रखकर साधन करने की प्रतिज्ञा की और ऐसे महोच्च दान के दाता के श्री चरणों में सिर झुकाकर उनका आशीर्वाद लाभ किया।

(जीवन पथ आश्विन 1960 वि० से उद्धृत)

अतीत के झरोखे से

(120 वर्ष पहले 'जीवन पथ' में छपे कुछ लेख)

प्राणधारी सारा जगत् एक है।

कलकत्ते के विख्यात प्रोफेसर जे० सी० बोस ने कितनी परीक्षाओं के अनन्तर यह सिद्ध किया है, कि मनुष्य की न्याई वृक्षों को भी विषकर पदार्थों के द्वारा हानि पहुंच सकती है। उन्होंने कई वृक्षों को क्लोरोफॉर्म (chloroform) देकर देखा कि वह उस के प्रभाव से मनुष्यों की सहश कमला गए, और फिर धीरे - धीरे मर गए। इसी प्रकार उन्होंने लंडन में बहुत से प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की एक सभा में यह सिद्ध करके दिखाया कि वृक्षों में भी प्राण संबंधी बहुत से लक्षण वही पाए जाते हैं, कि जो पशु जगत् और उस से ऊपर के प्राणियों में देखे जाते हैं। लंडन से एक लेखक उनकी उपरोक्त परीक्षाओं का वर्णन करने के अनन्तर लिखते हैं: -

(इन सब परीक्षाओं में) सब से बढ़कर विशेष बात यह थी कि उन्होंने (प्रोफेसर बोस ने) वृक्षों में ताड़क शक्ति के द्वारा प्रकाशित होने वाले जिन लक्षणों का अनुसन्धान किया है, वह सब प्राण शक्ति - संयुक्त विभागों में - चाहे वह सुकड़ने वाले हों और चाहे न सुकड़ने वाले - अर्थात् सब पट्ठों में, स्नायु में और उद्भिद् संबंधी जीवाणुओं में एक समान ही पाए जाते हैं। हम लोग धीरे धीरे उस समय पर पहुंच रहे हैं, जबकि हम पहले से भी अधिक स्पष्ट रूप से इस सत्य को उपलब्ध कर सकेंगे, कि प्राणधारी सारा जगत् एक है, चाहे वह किसी रूप में प्रकाशित हो रहा हो। क्या वृक्ष और क्या पशु और क्या अनेकाङ्ग या एकाङ्ग जीवधारी अपनी क्रियाओं और अपनी गठन के विचार से विश्व के संबंध में आपस में एक दूसरे के साथ घनिष्ट रूप से जुड़े हुए हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

जीवन प्रसंग

विविध संबंधों में नीच और विनाशकारी गतियों से मोक्ष पाने, और उच्च जीवन लाभ करने की, जब तक किसी सेवक के हृदय में गाढ़ आकांक्षा उत्पन्न न हो, तब तक उसके हृदय में श्री देवगुरु जी के प्रति अनुराग का सूत्र उत्पन्न नहीं हो सकता। और जब तक किसी सेवक के हृदय में यह सूत्र उत्पन्न न हो, तब तक वह उनके साथ कोई धर्म - गत, जीवन्त, सच्चा, मधुर, सुखमय और परम हितकर संबंध स्थापन नहीं कर सकता।

हमारी विशेष श्रद्धा की पात्र - 5

श्रद्धेया डाक्टर (कुमारी) प्रेम देवी जी

(भाग - 1)

[इस लेख का एक-एक शब्द अत्यंत मूल्यवान है]



ज्यों ज्यों समय बीतता जा रहा है, त्यों त्यों हम लोगों की अत्यंत निम्न अवस्था के कारण देव समाज की भी बहुत हानि होती रही है। इसी सिलसिले में देव समाज के महानतम सितारे (जिनसे हम प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उच्च बनाकर सच्ची खुशियों से भर सकते हैं) भी हमारी आंखों से ओझल होते जा रहे हैं। धीरे धीरे इस पृथ्वी में उच्च धर्म सम्बन्धियों की उच्च संगत भी लुप्त होती जा रही है। अब हमारे पास एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ज़रिया बचा है, उच्च धर्म सम्बन्धियों की संगत करने का। वह है उनके जीवन चरित्रों का बहुत ध्यानपूर्वक अध्ययन। इनका पाठ हमारे लिए अत्यंत कल्याणकारी प्रमाणित हो सकता है तथा हम उनके अति उच्च जीवन से प्रेरणा लेकर परम पूजनीय भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा तथा कृतज्ञता के भावों को भरपूर खुराक दे सकते हैं। इस माध्यम से हम उनके साथ अपना सच्चा आत्मिक सम्बन्ध भी स्थापित कर सकते हैं और जीवन की ऊंची से ऊंची मंज़िलें प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा ही एक अत्यन्त विशेष जीवन है श्रद्धेया कुमारी डाक्टर प्रेम देवी जी का।

जन्म एवं शिक्षा

आपका जन्म देहली के एक धनवान उच्च पदस्थ पिता के घर में सन् 1870 ई. में हुआ। जिस युग में लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था, उसी युग में इनके पिता जी ने इनके लिए घर में अध्यापक रखकर इनकी शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया। अभी इन की उमर तेरह साल के लगभग होगी, जब कि इन्हें श्री देवगुरु भगवान के धर्म साधनों में बैठने, उनके उपदेशों के सुनने, और उनके **देव प्रभावों** के लाभ करने का परम सौभाग्य लाभ हुआ। उनके देव प्रभावों को पाकर इनके आत्मा में अति आश्चर्यजनक **उच्च परिवर्तन** पैदा हुआ, और इनके आत्मा में अपने हित के लिए गाढ़ आकांक्षा उत्पन्न हो गई। यही थी इनके भगवान की अनुरागी शिष्या बनने की कुंजी।

धर्म भावों की असाधारण पूंजी तथा उसका देव संगत द्वारा उच्च विकास

उच्च मानसिक योग्यताओं के साथ साथ आपको धर्म भावों की उच्च पूंजी का विकास करने का भी विशेष अवसर प्राप्त

हुआ। जहां आज के 12-13 वर्ष के बच्चे बहुत चुस्त और होशियार नज़र आते हैं वहां आज से 140 वर्ष के पहले के बच्चों के हालातों की कल्पना करना मेरी समझ से पूर्णत: बाहर है।

इनके पिता जी का लाहौर से बाहर एक अन्य स्थान पर स्थानांतरण हो गया जिसके कारण इन्हें बहुत हार्दिक कष्ट के साथ अपने आध्यात्मिक परम उपकारी से (जिनके लिए उनके भीतर विशेष सात्विक उच्च अनुराग भाव पैदा हो चुका था) जुदा होना पड़ा। भगवान देवात्मा के साक्षात देव चरणों में न रह सकने के कारण उनके भीतर यह ज़ोरदार कामना पैदा होती रही कि वे किसी तरह शीघ्र भगवान के चरणों में पहुंच सकें। "जहां चाह वहां राह" की बात सत्य प्रमाणित हुई और भगवान के श्रीचरणों में पहुंचने की कामना उनकी 14 वर्ष की छोटी सी आयु (1884 ई.) में तब पूरी हुई जब उन्हें लाहौर के मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिल गया जहां पहली बार स्त्रियों के लिए मैडिकल शिक्षा का प्रबन्ध किया गया था। उनके पिता जी ने अपनी इस 14 वर्ष की कन्या को लाहौर में रखने के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा के संरक्षण में उनके घर में रखने से बेहतर और कोई स्थान न पाया। उन्होंने भगवान से यह विनती की कि वह कुमारी जी को अपने परिवार में रहने की अनुमति दें। उनकी विनती स्वीकार कर ली गई।

इस प्रकार उनके जीवन के विकास का दूसरा दौर आरम्भ हुआ। उनका यह बचपन का जीवन भगवान के परिवार में रह कर और उनकी साक्षात देव प्रभाव दायक संगत पाकर सफल होने लगा।



श्रद्धेया डाक्टर (कुमारी) प्रेम देवी जी
(1870 ई० से 1895 ई०)

सन् 1888 ई. में अपनी कक्षा की स्त्रियों में सर्वप्रथम रहकर आपने लेडी डफरिन का एक पदक ईनाम के स्वरूप प्राप्त किया था।

अहं का नाश और देव रूप के प्रति आकर्षण

इस दौरान कुछ काल तक इन्हें भगवान के **लगातार देव प्रभावों** के मिलने से इनके आत्मा में देवात्मा के देव रूप के प्रति **सात्विक** श्रद्धा भाव की इतने प्रबल रूप में उत्पत्ति हुई, कि जिसके विकसित होने से एक ओर इनके अहं अनुराग मूलक मान प्रशंसा विषयक पतनकारी नीच भाव इतने नष्ट हो गए, कि फिर उन पर आघात पाकर इनके लिए अपने परम गुरु देवात्मा से फट जाना और उनके देव प्रभावों की प्राप्ति से कट

जाना संभव न रहा, दूसरी ओर इस श्रेष्ठ योग्यता के प्राप्त हो जाने से धीरे धीरे इनके आत्मा में देवात्मा के देवरूप के प्रति वह सात्विक आकर्षण भाव भी जागृत हुआ कि जो बहुत दुर्लभ भाव है।

इस विषय में श्रद्धेया जी का अपने 23वें जन्म दिन के अवसर पर भगवान की सेवा में पत्र

"मेरे बचपन के जीवन के बारह तेरह वर्षों को छोड़कर शेष के दस ग्यारह वर्ष ऐसे हैं, जिन्हें मैं विशेष दृष्टि से देखती हूं। इस दस वर्ष के काल में जो कि एक बहुत बड़ा काल है, सबसे पहले मेरी दृष्टि उस विशेष दिन पर पड़ती है, जबकि मैं पहले पहल आपकी देव-उपासना में शामिल हुई थी तथा उसमें शामिल होने के साथ ही मेरे भीतर आपके लिए इतना आकर्षण उत्पन्न हो गया था, कि मेरा हृदय ही जानता था। मैं ज़ार ज़ार रोती थी तथा आप से जुदा होना नहीं चाहती थी। आपके भीतर देव ज्योति की जिस झलक को मैंने देखा था, उसने मुझे इतना आकृष्ट कर लिया, कि मेरा हृदय आपकी जुदाई से बहुत कष्ट महसूस करता था।

"यहां तक कि जुदा होने के बाद भी यद्यपि मेरा शरीर आपके श्री चरणों से दूर था तथा कितने काल तक दूर रहा, तथापि मेरा हृदय आप के चरणों में रहता था, तथा मैं चाहती थी, कि हज़ार तकलीफ़ उठाकर भी यदि मुझे आप की संगत में रहने का अवसर प्राप्त हो, तो मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है। सच्चे अर्थों में देखूं तो वही दिन मेरा जन्म दिन है। उस पवित्र तथा श्रेष्ठ दिन की याद इस समय भी मेरे सम्मुख है। आप के श्रीचरणों में आने के साथ ही जहां मुझे आप से एक प्रकार का स्वाभाविक लगाव अनुभव हुआ, वहां मैंने यह भी जाना कि मेरी आन्तरिक भूख की तृप्ति का सामान केवल आप ही के भीतर वर्तमान है। यही कारण है कि जब से मुझे प्रकृति (Nature) के विकासकारी प्रबन्ध से आपके श्रीचरणों में एक काल तक रहने का अवसर प्राप्त हुआ, तब से ही मैंने आपके जीवन के असाधारण एवं पवित्र प्रभाव लाभ करने आरंभ किए। इन प्रभावों ने मेरे जीवन पर जादू का सा काम किया। अर्थात् मेरे आत्मिक जीवन का तख्ता पलट गया। पाप से घृणा हो गई, तथा धर्म भावों का अंकुर मेरे भीतर उत्पन्न हो गया। यह परिवर्तन एक असाधारण परिवर्तन था, कि जिसने मेरे जीवन में अब तक बड़ा प्रभाव रखा है। उस समय मैं आपके श्रीचरणों में यद्यपि केवल दो महीने ही रही, तथापि उस समय मैंने जिन उच्च प्रभावों को ग्रहण कर लिया, वह मुझे आप के साथ हृदय से जोड़ देने के लिए यथेष्ट थे। जब मैं उस काल को स्मरण करती हूं, तो मेरी आंखों से आंसू बहने लगते हैं।"

जीवन की कठिनाइयों पर आपकी विजय

देव समाज का इतिहास इस बात की पूर्ण रूप से गवाही देता है कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के साथ जिस किसी भी जन का जितना गहरा संबंध बन गया, वे अपनी अपनी कठिनाइयों पर बहुत साहस और वीरता पूर्ण विजय प्राप्त करते गए। फिर, श्रद्धेया जी तो भगवान देवात्मा की अनुराज्ञी शिष्या थीं। इस महायुद्ध में अपनी कठिनाइयों के साथ

मुकाबला करने में उनके भीतर धर्म जीवन प्राप्त करने की आकांक्षा ने बहुत बड़ा साथ दिया। उनकी आयु बढ़ने के साथ, जैसे कि उस समय की भारतीय समाज में स्वभाभिक था, उनके माता पिता उनके ऊपर विवाह कराने का दबाव डालने लगे। यद्यपि कुमारी जी अपने तौर पर विवाह करना कोई बुरी बात न समझती थीं, किंतु वह विवाह की ज़िम्मेदारियों और उद्देश्य को अच्छी तरह से जानती थीं। वे कोई भी बात ऐसी नहीं करना चाहती थीं जिससे उन्हें धर्म जीवन लाभ करने और धर्म कार्य में अपने जीवन की सम्पूर्ण शक्तियां ल गाने में किसी प्रकार का कोई विघ्न पड़ने का सदेह हो। वह किसी ऐसे जन के साथ विवाह करना उचित न समझती थीं जो न तो धर्म जीवन रखता हो और न ही उनके धर्म मार्ग में स्पष्ट रूप से पूरी सहायता कर सकता हो। उनकी इस पवित्र इच्छा को उनके माता पिता व उनके अन्य उच्च पदाधिकारी संबंधी और मित्र किसी भी प्रकार समझ ना पाते थे। ऐसी स्थिति में जैसा कि आशा करनी चाहिए उनकी धुआंधार विरोधिता आरम्भ हुई। इस छोटी सी उमर की कन्या के सिर पर मानो विरोधिता का एक बहुत बड़ा पहाड़ टूट पड़ा। भगवान देवात्मा के लिए अनुराग पैदा हो जाने के कारण उनके भीतर धर्म का बहुत प्रबल बल पैदा हो चुका था। इस धर्मबल ने उन्हें अपने पवित्र संकल्प से ज़रा भी डांवाडोल न होने दिया।

उन्हें अपने धर्म पथ से विचलित करने के लिए हर संभव उपाय सोचे और अपनाए गए। उन्हें अपने धर्म स्रोत, अर्थात भगवान देवात्मा, के साथ संबंध को पूर्ण रूप से काट देने के लिए उनका भगवान देवात्मा वा उनके किसी शिष्य के साथ मिलना जुलना बिल्कुल बंद कर दिया गया। भगवान के विरोधियों को बुला बुला कर उनसे भगवान देवात्मा की भरसक निंदा करवाई गई। उन्हें भिन्न भिन्न धर्म समाजों व अन्य स्थानों में ले जाकर देव समाज की लगन को मिटाने की भरसक चेष्टा की गई। तरह तरह की धमकियां और ताने दिए गए। अतएव कभी डर से तो कभी प्यार से, कभी इस विधि से कभी उस विधि से उन्हें अपने धर्म मार्ग पर चलने के पवित्र निर्णय से गिराने के लिए हर संभव यत्न किया गया। उस छोटी सी उमर की कन्या ने जो अकेली थीं, पराधीन थीं और अभी अवयस्क थीं, इन सब कठिनाईयों का बहुत दिलेरी के साथ मुकाबला किया। ऐसा क्योंकर संभव हुआ? क्योंकि उनके आत्मा पर उस छोटी सी आयु में देव प्रभावों का अधिकार हो चुका था। श्रद्धेया जी अपनी इन विरोधिताओं के विषय में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सेवा में लिखती हैं:-

"एक काल के बाद मेरे लिए वह समय भी आया, जबकि मुझे न केवल आप के दर्शनों से वंचित किया गया, किन्तु आप के मकान का दरवाज़ा तक देखना और उस मार्ग से गुज़रना तक भी मेरे लिए मुश्किल कर दिया गया; और मानो चारों तरफ से विरोधिता के तूफ़ान ने मेरी आत्मा को घेर लिया। यह समय भी अपनी हालत के विचार से एक असाधारण तथा नाजुक समय था, कि जिस में मुझे एक लम्बे काल तक रहना पड़ा। मेरे हृदय में आप के लिए जो गहरा देव-प्रेम पैदा हो चुका था, उसने मुझे संसारासक्त

लोगों के साथ कभी एक नहीं होने दिया, किन्तु मुझे उनसे सदा ही अलग रखा और अलग प्रकट किया। हां, मेरी ज़िन्दगी का उस समय यदि कोई दिन वा घंटा वा मिनट ऐसा गुज़रा है कि जिस में मेरा दिल किसी भुलावट वा धोखे में आकर दुनिया के लिए किसी इन्सानी रिश्ते वा किसी सांसारिक वस्तु के पीछे गया है, तो वह दिन वा घंटा वा मिनट मेरे लिए नरक वा अज़ाब का समय प्रमाणित हुआ है। मैंने आपसे बढ़ कर और किसी को अपना प्यारा वा हितकर्ता नहीं देखा और न ही बोध किया। इसलिए कठिनाइयों के समय मेरी विशेष रूप में सहायता हुई। हां ऐसे समयों में जबकि मैं अपने माता पिता और अन्य सम्बन्धियों की सांसारिक भुलावटों से बुरी तरह घिरी हुई और बेज़ार थी, और घर और बाहर के सम्बन्धियों के भिन्न विविध कहलाने वाली मज़हवी समाजों और सोसाइटियों के लोग भी मेरे पिता के पास आकर मुझे गिराने और गुमराह करने का यत्न करते थे, तब मेरे दिल के भीतर से आपके प्रेम की ज़ोरदार गूंज निकलती थी, और वह मुझे सदा अटल विश्वास और अटल इरादे से उनके साथ लड़ने और उन पर जय लाभ करने के लिए तैयार करती थी। उस काल की बहुत सी ऐसी घटनाएं मेरे सामने आकर अजीब तरह से मेरे दिल को हिला देती हैं, कि जिन में मैंने अपने तई (आपको) बहुत दुर्बल और बेबस अनुभव किया है, और अपने जीवन के उच्च लक्ष्य में कृतकार्य होने के लिए बहुत रो रोकर प्रार्थनाएं की हैं, और जिन में मैंने अनेक बार महसूस किया है, कि शायद मेरा यह कठिन मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकेगा, कदाचित मेरे दिल की सब उच्च उमंगें चकनाचूर हो जायेंगी। उस समय मैं यह ख्याल करती थी, कि मानो प्रत्येक शक्ति ने मुझे गिरा देने का ही फ़ैसला कर लिया है। परन्तु आखिरकार मेरी सब उलझनें उस वफ़ादारी और सच्चे प्रेम के कारण सुलझ गई, कि जो मेरे भीतर आपके प्रति पैदा हो चुका था। और ऐसी विधि से सुलझीं, कि मैं उसे अपने जीवन में एक बहुत बड़ा चमत्कार मानती हूं। हां, यदि आपका वह प्रेम जो जीवन्त शक्ति के रूप में मेरे भीतर वर्तमान था, वर्तमान न होता, तो फिर कौन उन कठिनाइयों का सामना कर सकता? कौन उन विरोधी शक्तियों के प्रभावों से मेरी रक्षा करके मुझे आपके जीवनव्रत में भाग लेने के योग्य बनाता? कोई नहीं। आप की शक्ति पाकर धीरे धीरे मेरे सारे बाह्यक बंधन कट गए, जीवन का मार्ग साफ़ हो गया और मेरे हृदय की उच्च आकांक्षाएं पूरी हुई।"

अब श्रद्धेया जी 18 वर्ष की वयस्क हो गई

इस धुआंधार विरोधिता में से गुज़रते हुए अंततः कुमारी जी अठारह वर्ष की हो गईं। उन्होंने अपने वयस्क हो जाने के निजी अधिकार को समझते हुए अपने माता पिता से भगवान के देव साधनों में योग देने के लिए अनुमति की प्रार्थना शुरू कर दी। बहुत कठिनाई के बाद उन्हें देवाश्रम में जाकर धर्म साधनों में योग देने की अनुमति तो मिल गई लेकिन उन पर धर्म साधनों में योग देने के कारण तरह तरह से नाराज़गी का प्रकाश किया जाता रहा। यहां तक कि एक दिन जब वह शाम के समय धर्म साधन में योग देने के बाद घर वापिस आई तब उनके पिता ने उन्हें

घर में घुसने नहीं दिया तथा घृणा से भरकर कहा, "तुम्हारा हमारे घर में कुछ काम नहीं है, तुम कहीं और जाकर रहो।" अपने पिता के मुंह से ऐसा आदेश सुनकर कुमारी जी के हृदय पर क्या बीता होगा, उसका अनुमान कौन कर सकता है? उस समय श्रद्धेया जी बीमार थीं और ऐसी हालात में घर से बाहर निकल जाने का हुक्म पाकर उन्हें केवल एक सहारा ही नज़र आया और वह था देवाश्रम में शरण पाने का। उन्हें वहां आश्रय प्रदान किया गया।

देव चरणों में जीवन भेंट

सन् 1889 ई. में 19 वर्ष की आयु में इन्होंने अपने उपरोक्त सात्विक भावों से परिचालित होकर अपने आत्मिक कल्याण और अपने परम गुरु देवात्मा श्री देव गुरु भगवान के अद्वितीय जीवन व्रत में सेवाकारी बनने के निमित्त उनका **आश्रय** ग्रहण किया। यह उस समय तक देव समाज के उन निर्दिष्ट दस पापों से विरत होने के भिन्न कि जिनसे विरत होकर ही कोई जन देव समाज में प्रवेश कर सकता था, धन, पारिवारिक संबंधियों, और वैवाहिक सुखों के नीच और पतनकारी अनुरागों से भी मोक्ष पा चुकी थीं। सन् 1890 ई. में उपरोक्त महा शुभ अभिप्राय के लिए इन्होंने अपने आपको पूर्णत: अर्पण किया, और ऐसा करने में इन्होंने एक ओर डाक्टरी के व्यवसाय की सारी आमदनी, अपने पिता-माता और अन्य संबंधियों के सब मोह मूलक संबंध, और एक बड़े अमीर घराने के एक ग्रेजूएट के साथ इनके पिता-माता ने जो इनकी शादी की तजवीज़ की थी, उस शादी की तजवीज़ को पूर्णत: **त्याग** किया, और दूसरी ओर इन्होंने सारी उमर कुमारी रहकर पुरुषों के भिन्न अपने देश की स्त्री जगत की आत्मिक और शारीरिक सेवा का **महा कठिन**, परन्तु **महा श्रेष्ठ व्रत**, विशेष रूप से ग्रहण किया। इनके ऐसा करने पर जैसा कि आशा हो सकती थी।

विरोधियों को इन्हें और भगवान देवात्मा को बदनाम करने का बहुत बड़े औज़ार मिल गए

अब क्या था? भगवान के विरोधियों को और क्या चाहिए था? उन्हें तो भगवान पर आक्रमण करने के लिए बहुत बड़े औज़ार मिल गए। एक के बाद एक पूर्णतया झूठे और गंदे से गंदे आरोपों की झड़ी लगा दी गई। सत्य और शुभ अनुरागी भगवान अपने देवबल के साथ तो ऐसी विरोधिताओं का मुकाबला करते ही आए थे। परन्तु एक लगभग 19 वर्ष की दुर्बल कन्या के लिए यह कठिनाइयां सहनी कितनी कठिन हो सकती हैं इसका भी अनुमान हम साधारण मनुष्य नहीं लगा सकते। कहते हैं न, "जिस तन लागे सो तन जाने, जाके पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।" इस सबसे यद्यपि इनके शारीरिक स्वास्थ्य को अवश्य बहुत हानि पहुंची, परन्तु यह अपने उच्च व्रत से एक इंच भी पीछे न हटीं। इन घटनाओं को स्मरण करते हुए कुमारी जी के भगवान के नाम पत्र का एक भाग इस प्रकार है:-

"उस समय मिथ्या तथा अहित के साथियों ने मुझे तो बदनाम किया ही था, परन्तु मेरे कारण आपको भी जितना बदनाम किया गया, आपके ऊपर तरह तरह के झूठे आरोप लगाए गए तथा आपको नाना प्रकार से सताने तथा हानियां पहुंचाने का यत्न किया

गया, मेरे लिए वह सब कुछ सहना भी आपका कुछ कम त्याग न था"

इस सबके बाबजूद

इन सारी महा दुखदायी घटनाओं में से गुज़रकर श्रद्धेया जी का आत्मिक बल पहले से भी बहुत बढ़ गया। वे देवाश्रम में आकर रहने के बाद अनेक बार अपने माता पिता के घर में जाकर उनकी इच्छा अनुसार सत्संग की सभाएं करती रहीं तथा वहीं पर एक अच्छे काल तक एक धर्मार्थ डिस्पेन्सरी भी खोलकर उसमें प्रतिदिन बहुत सा समय देकर बहुत बड़ी संख्या में स्त्रियों तथा बच्चों का मुफ्त ईलाज भी करती रहीं। इन सब के अतिरिक्त यथा अवसर उन्होंने अपने माता पिता व भाई बहनों में से किसी की बीमारी में जिस प्रकार परिश्रम तथा हितभाव से उनका ईलाज किया, वह भी बहुत प्रशंसनीय था।

लाहौर तथा पंजाब से बाहर अन्य प्रांतों में स्त्री जाति की आत्मिक तथा शारीरिक भलाई का काम

इन्होंने स्त्री जाति के क्या शारीरिक रोगों की चिकित्सा और क्या उनके विविध प्रकार के आत्मिक हित के लिए, क्या लाहौर और क्या पंजाब और सिंध आदि के अन्य स्थानों में बहुत परिश्रम के साथ काम किया, और क्या सुख क्या दुख, क्या रोग और क्या पीड़ा और क्या नेकनामी और क्या बदनामी और क्या किसी भी और प्रतिकूल दशा में यह अपने परम गुरु देवात्मा की उस जय पताका के लिए **सदा सच्ची रहीं**, कि जिसके नीचे खड़ी होकर इन्होंने अपना उच्च व्रत ग्रहण किया था।

इन्होंने न केवल स्त्रियों को भयानक मिथ्या विश्वासों, कुसंस्कारों और पारिवारिक कलह क्लेश इत्यादि से उभारने, उनके शारीरिक रोगों के इलाज के लिए अपने पास से दवाई इत्यादि देकर सेवा करने और उनमें धर्म के उच्च भाव पैदा करने का अति सुंदर काम किया है, उसका वर्णन बहुत आश्चर्यजनक एवं लम्बा है जिसका हम स्थान की कमी के कारण यहां विस्तार से वर्णन करने में असमर्थ हैं।

छोटी सी आयु में भिन्न भिन्न क्षेत्रों में शारीरिक सेवा और धर्म प्रचार द्वारा आत्मिक सेवा

यहां इतना ही कहना उचित होगा कि उन्होंने रावलपिंडी तथा इस ज़िले के अनेक गावों, अमृतसर, फिल्लौर, गुजरांवाला, स्यालकोट, कल्लर, सुक्खो, बसाली, कोंतरीला, दौलताला, मौंटगुमरी, मुलतान (यहां पर भी उन्होंने टाउनहाल में एक पब्लिक लेक्चर दिया था, कि जिसके अंत में एक भद्र अंग्रेज ने उसके समर्थन में एक वक्तव्य दिया था), खानपुर, डेरा ग़ाज़ीखान, भक्खर, बंठिडा, महराज, बज्जोआना आदि में अपने पवित्र ध र्म साधनों के द्वारा बहुत उच्च प्रभाव डाले।

श्रद्धेया जी का कार्य क्षेत्र केवल पंजाब तक सीमित नहीं था। इनके भीतर अपने देशवासियों की आत्मिक तथा शारीरिक सेवा का इतना प्रबल भाव था कि इन्होंने अपने आपको लाहौर व पंजाब तक सीमित नहीं रखा, अपितु उससे बाहर जाकर हज़ारों देशवासियों, विशेषत: स्त्री जाति, की विविध प्रकार की श्रेष्ठतम सेवा करके उनकी भलाई का हेतु बनती रही हैं यथा इन्होंने बलोचिस्तान, कोयटा इत्यादि में

अपना सेवा का काम जारी रखा। इसके अतिरिक्त उन्होंने सिंध के निम्नलिखित स्थानों में देव धर्म प्रचार तथा स्त्रियों की सेवा का अभूतपूर्व कार्य किया:- रोहड़ी, सक्खर, पुराना तथा नया शिकारपुर, सेवन तथा हैदराबाद।

यह हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी, बंगाली और कुछ संस्कृत भाषा भी जानती थीं, और हिन्दी और उर्दू भाषा में बहुत अच्छा बोलती और लिखती और खूब ज़ोरदार लेक्चर देती थीं।

यदि क्षयी रोग के कारण इनके शरीर से इनके आत्मा का शीघ्र वियोग न हो जाता, तो यह समय के साथ साथ अपने परम गुरु देवात्मा के जीवन व्रत और देव समाज के लिए जितनी सेवाकारी होतीं, उसका इस समय अनुमान तक करना कठिन ही नहीं, असंभव है।

संगीत में निपुणता

इनमें गाने और सितार और हारमोनियम के बजाने का सद्गुण वर्तमान था, और जब यह किसी भी धर्म साधन के समय सितार वा हारमोनियम को बजा कर और अपने उच्च भावों से परिचालित होकर किसी धर्म संगीत का गान करती थीं, तब उसे सुनकर अधिकारी जनों के हृदय पिघल जाते थे।

भगवान देवात्मा के लिए सात्विक प्रेम

देवात्मा के देवरूप के प्रति इनके हृदय में **महा दुर्लभ सात्विक प्रेम** के जागृत हो जाने से यह उनकी कई शुभाकांक्षाओं, उनके कई शुभ संग्रामों, उनके कई प्रकार के कष्टों और दुखों को **स्वभावत:** एक वा दूसरी सीमा तक बहुत अधिक गहराई के साथ अनुभव करती थीं, और उनके लिए यथा संभव सेवाकारी बनती थीं।

श्रद्धेया जी की मृत्यु पर भगवान के कुछ उद्गार

14 फरवरी सन् 1895 ई. के दिन, जब वे केवल 24 वर्ष से कुछ अधिक आयु की थीं, मौंटगुमरी में इनका देहान्त हुआ। इनके देहान्त के तीसरे दिन देव समाज के आठवें वार्षिक उत्सव पर जब भगवान ने अपने उपदेश के आरंभ में इनके संबंध में यह शब्द कहे, कि ''आज हमारी इस सभा में वह कुमारी प्रेम देवी जी कहां हैं, कि जो पिछले कई वर्षों में हमारी ऐसी सभाओं में वर्तमान होकर अपनी पतली पतली उंगलियां सितार के तारों वा हारमोनियम के पर्दों पर फेर कर और अपने हृदय के उच्च भावों और अपनी सुन्दर और सुरीली कंठ ध्वनि के द्वारा धर्म संगीतों का मधुर गान करके हमारे हृदयों को पिघला देती थीं,'' तब उस समय उनके इन शब्दों के उच्चारण करने पर जैसे खुद भगवान की आंखों से पवित्र आंसुओं की धारा बह निकली, वैसे ही और कितने ही उपस्थित जनों के हृदय भी पिघल गए, और उनकी आंखों से भी पवित्र आंसू जारी हो गए।

परलोक में श्रद्धेया जी का उच्च से उच्चतर लोकों में वास

कुमारी जी का स्थूल शरीर यद्यपि आग में जलकर राख हो गया, तथापि इन्होंने अपने आत्मा को जितना पवित्र और उच्च बना लिया था, उसके अनुसार वह जैसे एक ओर ऊंचे दर्जे के सूक्ष्म शरीर को संगठित करने और अपेक्षाकृत उच्च लोक में पहुंचने और वास करने, और उससे आगे के कितने ही और उच्च लोकों के लिए जिस और उच्च जीवन की आवश्यकता है, उसकी प्राप्ति के योग्य

बन गईं; वैसे ही दूसरी ओर वह इस लोक में अपने पीछे अपने जिस उच्च जीवन चरित्र को छोड़ गई हैं, उसकी सच्ची कथा भी जहां तक अधिकारी आत्माओं में अपने उच्च प्रभावों के द्वारा शुभ परिवर्तन उत्पन्न कर रही है, और आगे करेगी, वहां तक यह अपने इस श्रेष्ठ चरित्र के द्वारा जैसे अब भी देवात्मा के जीवन व्रत में सेवाकारी बन रही हैं, वैसे ही आयन्दा अब की अपेक्षा और अधिक से अधिक अनुकूल समय के आने पर और भी अधिक से अधिक सेवाकारी और पुण्यकारिणी बनेंगी।

इसके भिन्न इन्होंने परलोक में जाने के अनंतर एक वा दूसरी उच्च विधि से इस लोक के और जनों की जहां तक कुछ और आत्मिक सेवा की है, वह उपरोक्त सेवा के सिवाय है।

भविष्य के लिए शुभकामना

समय के साथ-साथ ज्यों ज्यों अधिक से अधिक ऐसी अधिकारी स्त्रियां पैदा होंगी, कि जो उनका सा जीवन व्रत ग्रहण करने के योग्य होंगी, त्यूं त्यूं ऐसी स्त्रियां इनकी न्याई अपना जीवन व्रत ग्रहण करने में अपना परम सौभाग्य अनुभव करेंगी।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के साथ देव अनुराग सूत्र में बंधकर श्रद्धेया जी के जीवन में जो उच्च भाव व उच्च गुण विकसित हुए उसका अत्यंत संक्षिप्त विवरण हम धर्म जीवन के पाठकों के लाभ हेतु इस पत्रिका के नवंबर अंक में देने की इच्छा रखते हैं। श्रद्धेया जी द्वारा रचित कुछेक गीत भी नवंबर अंक में प्रकाशित करेंगे। इनमें से प्रत्येक गीत का विचार और ध्यानपूर्वक गान अपने आप में उतना देव प्रभाव संचारक है जितना हमारे बहुत बड़े बड़े व्याख्यान भी नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त पाठकों के लाभ हेतु श्रद्धेया जी के व्याख्यानों का कुछ भाग हम धर्म जीवन के फरवरी 2022 अंक में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

-डा० विनोद खेड़ा

श्रद्धेया डाक्टर (कुमारी) प्रेम देवी जी के संबंध में गीत

सच्ची शिष्या अपने गुरु की नाम, है जिनका श्रद्धेया जी,
मिलकर गाएं आज कथा हम उनके तप और त्यागों की।
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान
कूद पड़ी थीं देव मिशन में तजकर अपना सुख और मान
गुरु चरणों की लगन लगी तो पिता ने घर से दिया निकाल
देव संगत में जाना है तो चली जाओ यहां से तत्काल
चली श्रद्धेया जी गुरु शरण में देव गुरु को रक्षक मान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

देव गुरु के द्वार पहुंच कर ज्योंहि सुनाया अपना हाल
करूणा के सागर सतगुरु ने फ़ौरन करी उनकी संभाल
घर है आज से यही तुम्हारा बोले फिर मेरे भगवान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

घर वालों ने बहुत सताया शादी पर इसरार किया
धर्म मार्ग पर रोक जान इस देवी ने इन्कार किया
उनके मन को तो भाया था देव गुरु का रूप महान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

रूखा-सूखा खाकर अपना तन-मन-धन सब भेंट चढ़ाया
तन के कपड़े बेच उन्होंने गुरु मिशन का कर्ज़ चुकाया
निर्भय हूं मैं निर्भय हूं गाती थीं वो हस्ती महान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

अन्तिम घड़ियों में उन्होंने उपकारियों को याद किया
भीगी पलकें हाथ जोड़कर उन सब का धन्यवाद किया
अपने गुरु से सच्ची रहकर किया परलोक को फिर प्रस्थान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

श्रद्धेया जी के फूल उठाने शिष्यों को लेकर साथ
नंगे पांव श्मशान पधारे परम पूजनीय हमारे नाथ
भक्ति भाजन भक्त को देने चले यह निराला सम्मान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

भस्म इक्टठी कर जब उनकी गिर्द खड़े थे सारे जन
पावन मुख से तब ही अपने भगवन ने थे कहे वचन
उन वचनों को दुनिया बोली सुनो तनिक तुम देकर ध्यान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

हे श्रद्धेया जी होतीं यदि तुम राजेश्वरी या महारानी
मेरे द्वारा कभी न जातीं तुम इस दर्जे सन्मानी
उच्च जीवन से खाली जो मानव है वो कैसा इंसान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

लेकिन तुमने धर्म की खातिर तन-मन-धन अपने वारे
गुरु अनुरागी रहकर तुमने सुख के लक्ष्य तजे सारे
इसीलिए हे देवी तुमको देने आया हूं सन्मान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

गौरव शील बनाया तुमने देव मिशन का जो इतिहास
अमर रहेंगी उसमें श्रद्धेया जी यह मन में रखो विश्वास
धन्य श्रद्धेया धन्य श्रद्धेया अमर श्रद्धेया देव गुरु की शिष्य महान
देव कथा में श्रद्धेया जी का है अपना अनुपम अस्थान।

सितंबर अंक का शेष

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र - 4 (क्रमशः)

श्रद्धेय श्रीमान् बख्शी रत्न चन्द जी जौहर के विषय में

विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान् प्रेम बल जी खेड़ा के संस्मरण

(उनके स्वलिखित जीवन चरित्र से)

उन दिनों विशेष सम्मान के योग्य बख्शी रत्न चन्द जी जौहर, मंत्री देवसमाज के सम्पर्क में आने का मुझे अधिकार मिला। उनसे हितकर बातचीत द्वारा और उनकी सभाओं में शामिल होकर मैं लाभ उठाता रहा। उपरोक्त श्रीमान् जी भी उस वक्त से लेकर अपनी आखिरी उमर तक बराबर मुझ तुच्छ के जीवन में दिलचस्पी लेते रहे। मेरी देवसमाज की संस्थाओं में जो उमर गुज़री है और जीवन के कई संघर्षों में जो रक्षा और उन्नति हुई है, उसकी तह में उनका बहुत बड़ा हाथ है।

मेरी छोटी बहन प्रेमलता जो जोधपुर स्कूल में हैडमिस्ट्रैस का काम करती थी, उसे मदद की ज़रूरत थी। इसलिए एम.ए. का इम्तिहान दे चुकने के बाद मैं और मेरी धर्म पत्नी उसकी मदद के लिए जोधपुर पहुंच गए और कई महीने तक हम वहां रहे और हर मुमकिन मदद अपनी बहन की करते रहे। घर का तमाम काम मेरी धर्म पत्नी ने संभाल लिया। जोधपुर में जसवन्त कालेज में हमारे एक मिलने वाले काम करते थे और वहां पर अंग्रेजी के लैक्चरर की जगह खाली हुई और वह मुझे आसानी से मिल सकती थी और मैं 300 रुपये की माहवार की नौकरी पर काम कर सकता था, लेकिन मेरी और मेरी धर्म पत्नी की यह ज़बर्दस्त ख्वाहिश थी कि हम भगवान देवात्मा की जारी की हुई किसी संस्था में काम करें। चुनांचे अभी मैंने वहां काम करना शुरू नहीं किया था कि मेरे एक विशेष उपकारी श्रीमान् बख्सी जी जो उस वक्त देवसमाज के मंत्री और देवसमाज विद्या विभाग के इन्चार्ज़ थे, की एक चिट्ठी मुझे मिली कि देव समाज कालिज फार विमैन फिरोज़पुर में एक अंग्रेज़ी के प्रोफैसर का पद खाली है, और कि वह यह चाहते हैं कि मैं उस पद के लिए अपनी दरख्वास्त भेज दूं। उन्होंने यह भी लिखा कि कालिज के माली (आर्थिक) हालात अच्छे नहीं हैं, इसलिए वह 60 रुपये माहवार दे सकेंगे और चाहेंगे कि मैं कम से कम दो साल का बौंड भर कर इस कालिज में काम करना शुरू करूं। उनके साथ सम्बन्ध और अपने लगाव का मैं पहले ज़िकर कर चुका हूं। उनको न में जवाब देना मेरे लिए बहुत ही मुश्किल था। उनके चाहने पर मैंने फैसला किया कि मैं 60 रुपये माहवार पर देवसमाज गर्ल्ज़ कालेज फिरोज़पुर शहर में काम करूं। मेरी धर्म पत्नी ने मेरे इस फैसले में मेरा पूरी तरह से साथ दिया।

चुनांचे हमने घर वालों से सलाह मश्वरा किए बिना ही बख्शी जी को लिख दिया कि उनकी ऑफर हमें मंज़ूर है। और मैं 27 सितम्बर को कालेज में काम पर लग जाऊंगा। मेरे पत्र के मिलने पर श्री बख्शी जी बहुत खुश हुए और उन्होंने कई जनों से यह प्रकाश किया कि इस नौजवान का 300 रुपयों की नौकरी छोड़ कर और साठ रुपयों का काम मंज़ूर करना बहुत तारीफ के लायक अमल है। हमारे इस फैसले को

मेरे घर वालों ने बिल्कुल पसंद न किया और खूब ज़ोर से विरोध किया। लेकिन इस विरोध के बावजूद हमने फिरोज़पुर में काम करने का फैसला कर लिया और 27 सितम्बर 1937 को मैंने फिरोज़पुर में काम करना शुरु कर दिया। हम लोग आखिर दिसम्बर सन् 1944 तक फिरोज़पुर में रहे। अफसोस कि इन दिनों में कई किस्म की मुश्किलात का सामना हमें करना पड़ा। लेकिन मुश्किल से मुश्किल हालात में मेरी धर्म पत्नी हर हाल में मेरा साथ देती रहीं। और उस सहारे की वजह से मुश्किल हालात का वक्त भी अच्छी तरह से बीत गया।

इस अर्से में तजवीज़ हुई कि देव समाज की एक संस्था अम्बाला शहर में खोली जावे जहां देव समाज मंदिर मौजूद था। इस मंदिर में कोई ज्यादा जगह तो न थी लेकिन शुरु में काम चल सकता था। बुजुर्ग श्रीमान ईश्वर सिंह जी और श्रीमान् बख्शी जी के चाहने पर मैं अम्बाला गया और वहां के हालात की स्टडी की, कि वहां पर कालिज चलने के हालात हैं या कि नहीं। मैं शायद दोबारा देव समाज के काम में न लगता लेकिन एक बार फिर श्रीमान बख्शी जी ही जिन्होंने शुरु शुरु में मुझे इस काम पर लगाया था, मुझे इस काम पर लगाने के कारण हुए। वह बीमार थे और देहली अपने एक रिश्तेदार के यहां ठहरे हुए थे। मैं उनकी सेहत के बारे में मालूम करने और सेवा करने की ग़र्ज से उनके पास हाज़िर हुआ। मुझे देखते ही वह रोने लग गए और फरमाने लगे कि मैं तुम्हारी मुफीद ज़िन्दगी को देव समाज के कारज में लगा हुआ देखना चाहता हूं। उन्हीं की ख्वाहिश पर ही मैं अम्बाला गया था।

स्वजाति के संबंध में व्रत (15 अक्तूबर) पर विशेष

अपने जाति के जनों को...

(परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा रचित गीत)

अपने जाति के जनों को, अपना ही मैं जानूंगा;
उन के संग कल्याण कर, सम्बन्ध अपना बढ़ाऊंगा। 1

करके इच्छा उनके प्रति, अन्याय भाव न धारूंगा;
और किसी अपराध द्वारा, दुःख नहीं पहुंचाऊंगा। 2

अपने जाति जनों के प्रति, जो मेरे अपराध हों,
कर उचित परिशोध उनका, शुद्ध बनना चाहूंगा। 3

अपने जाति जनों में जो, पूजनीय और उच्च जन;
जाति गौरव के लिए मैं, उन की महिमा गाऊंगा। 4

जिस से जाति उच्च हो और, शक्ति उस की हो अधिक,
दूर हो सब अशुभ उस के, ऐसी इच्छा धारूंगा। 5

अपने जाति जनों का मैं, सकल हित ही चाहूंगा;
हो सहायक यथा शक्ति, उस को उच्च बनाऊंगा। 6

हमारी जाति में मिथ्या कुल भेद।

आज से कई सहस्र वर्ष पहले जब आर्य लोग (जो अब हिन्दू कहलाते हैं) पंजाब में आकर बसे, तो उनमें से कुछ लोग जो यहां के आदिम निवासियों से युद्ध करके आर्य-राज्य स्थापन और उन्नत करने में प्रवृत हुए, वह क्षत्रिय कहलाने लगे और कुछ लोग जो कृषि-कार्य और पशु पालन और एक वा दूसरी प्रकार की वस्तुओं के क्रय और विक्रय करने के काम में लगे, वह वैश्य; और जो क्या क्षत्रिय और क्या वैश्य दोनों कुलों के धर्म शिक्षक बनकर उन्हें उस समय की अवस्था के अनुसार धर्म-शिक्षा देने, धर्म विषयक चिन्ता करने और ऋचा और ग्रन्थ आदि रचना करने और यज्ञ, होमादि नाना प्रकार के अनुष्ठान कराने के काम में प्रवृत हुए, वह ब्राह्मण कहलाने लगे। इन तीनों आर्य कुलों के भिन्न यहां के वह सब अनार्य आदिम निवासी जो युद्ध में पराजित होकर और आर्य लोगों के दास बन कर, और उनकी टहल सेवा आदि करके निर्वाह करने लगे, वह शूद्र नाम से पुकारे गए। आर्य कुल के लोग अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य संस्कार करने के कारण अपने आपको द्विजातीय भी कहने लगे।

गुण कर्म के विभाग से यद्यपि आर्य लोगों के तीन कुल वा वर्ण बन गए, परन्तु उनके आपस में खान पान और विवाह आदि का अब की न्याईं कोई अनुचित प्रभेद न था। ब्राह्मण कर्म कर्ता क्षत्रिय अथवा वैश्य कर्म कर्ताओं के साथ विवाह करते थे। क्षत्रिय कुल के लोग ब्राह्मण कुल की बेटी लेते थे। अनेक बार एक हि परिवार के लोगों में से कोई जन अपनी रुचि के अनुसार ब्राह्मण कर्म ग्रहण करके ब्राह्मण बन जाता था, और कोई क्षत्रिय वा वैश्य कर्म ग्रहण करके क्षत्रिय वा वैश्य हो जाता था। प्रियमेध, शिनि, गार्ग और मुद्गल आदि क्षत्रिय कुल के लोग ब्राह्मणों का कर्म करके ब्रह्मार्षि बन गए थे। इसी प्रकार ब्राह्मण कुल के अगस्त्य मुनि, अग्निवेश, द्रोणाचार्य आदि धनुर्वेद सीख कर क्षत्रिय हो गए थे। रासभ देव के बेटों में से 9 ध्यान योग और दर्शन शास्त्र की आलोचना में प्रवृत होकर ब्राह्मण बने थे; और 10 बेटे क्षत्रिय कर्म में प्रवृत होकर राजे हो गए थे।

फिर विवाह के विषय में भी कुल विषयक कोई रोक न थी। क्षत्रिय राजा विदर्भ की बेटी ब्राह्मण कुल के अगस्त्य ऋषि को ब्याही गई थी, और राजा लोमपाद की कन्या ऋषि श्रङ्ग को, और क्षत्रिय राजा भागीरथ की पुत्री, कौत्स ऋषि को और राजा श्रयाति की कन्या च्यवन ऋषि को ब्याही गई थी। इसी प्रकार ब्राह्मण कुल जात शङ्कर की बेटी का क्षत्रिय कुल जात ययाति के साथ विवाह हुआ था।

फिर जो लोग धर्म साधन करते थे, और ऋषि कहलाते थे वह तपोवनों में वास करके भी विवाह करते थे। वशिष्ट, अत्रि अगस्त्य आदि बहुत से ऋषि अपनी अपनी स्त्रियों के साथ वास करते थे। स्त्रियों का उस काल में बहुत आदर सत्कार किया जाता था। परदे की अनुचित प्रथा न थी। ब्रह्मचर्य की विधि के अनुसार यौवन काल प्राप्त होने से

पहले लड़के लड़कियों का विवाह नहीं होता था। परन्तु जब एक ओर धीरे धीरे धर्म और विद्या के स्थान में अधर्म और मूर्खता ने आकर डेरा जमाया, तो उपरोक्त सब हितकर रीतियों को बहुत हानि पहुंची। गुण कर्म को लेकर जो कुल व्यवस्था थी, वह चली गई। अहंकार और मूर्खता के कारण जो जन जिस कुल में उत्पन्न हुआ, वह अन्य कुल के गुण कर्म रख कर भी अन्य कुल के स्थान में अपने पहले हि कुल का मनुष्य कहलाता गया और इससे द्विजातीय आर्यों के उपरोक्त तीनों कुलों में बहुत प्रभेद हो गया। पहले तीनों कुल एक दूसरे से फट गए, फिर प्रत्येक कुल ने आपस में भी फटना आरम्भ किया। जो ब्राह्मण सरस्वती नदी के तट पर वास करने से सारस्वत कहलाते थे, वह कान्य कुल प्रदेश के रहने वाले कान्य कुल ब्राह्मणों से अपने आपको अलग समझने लगे। गौड़ देश वासी गौड़ ब्राह्मण इन दोनों से जुदा हो गए। महाराष्ट्र प्रदेश के ब्राह्मण मरहटे बन कर इन सब से पृथक हो गए। गुजरात प्रदेश के रहने वाले ब्राह्मण अपने आपको गुजराती ब्राह्मण कहकर औरों से अलग थलग हो गए। फिर इन ब्राह्मणों के भी इसी प्रकार बढ़ते बढ़ते सैकड़ों विभाग हो गए। क्षत्रियों और वैश्यों की भी यही अवस्था हुई। इनके भी सैंकड़ों टुकड़े हो गए। पहले सब कुल जिस प्रकार खान पान और विवाद आदि सामाजिक बन्धनों के द्वारा आपस में बन्धे हुए थे, वह सब एक दूसरे से कटकर अलग अलग हो गए। मेल के स्थान में अनमेल की उत्पत्ति और उन्नति हुई। और हिन्दुगण करोड़ों की संख्या में होकर भी इस महा अनिष्टकारी सामाजिक विच्छेद के कारण जिस प्रकार की दुर्बलता और दुर्दशा को प्राप्त हुए, उस प्रकार की दुर्वस्था को किसी और देश के रहने वाले प्राप्त नहीं हुए, क्योंकि उनमें इस प्रकार का महा हानिजनक मिथ्या कुल भेद उत्पन्न और उन्नत नहीं हुआ।

(जीवन पथ आषाढ़ 1958 से उद्धृत)

आवश्यक सूचना

धर्म जीवन के सभी पाठकों से सविनय निवेदन है कि वे निम्न लिखित पते पर लिख कर एवं +91-8146553154 पर Whatsapp करके सूचित करने की कृपा करें कि वे इस पत्रिका को भविष्य में भी प्राप्त करना चाहते हैं कि नहीं।

House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022. Phone : 0172 - 4043622

यदि आपने इस पत्रिका का चंदा न दिया हो तो इसका वार्षिक चन्दा जो मात्र 50 रू० वार्षिक है, साथ दिये अकाउंट में जमा करवाने की कृपा करें तथा अपना पूरा नाम, पता, फोन नं० के साथ ऊपर दिये पते या Whatsapp पर भेज दें।

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ GLOBAL
Central Bank of India,
Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919
IFSC Code : CBIN0280414

आपके सहयोग की अपेक्षा रहेगी। धन्यवाद

हिन्दुओं में जातिवाद

हंसी के द्वारा सत्य की शिक्षा

कुछ लोग एक जगह एकत्र बैठे थे। आपस में कुछ निर्दोष हंसी की बातें कर रहे थे। इतने में स्वामी ज्ञान देव भी वहां आ पहुंचे। सब वर्तमान जनों ने बहुत आदर सम्मान के साथ उन्हें बैठने के लिए स्थान दिया। स्वामी जी के आसन ग्रहण कर लेने पर सब जनों ने विनय पूर्वक उन से आवेदन किया, कि आप के आने से पहले हम लोग कुछ निर्दोष हंसी की बातें कर रहे थे, यद्यपि उनसे हंसी तो आती थी, पर कुछ शिक्षा नहीं मिलती थी। आप महात्मा हैं, बहुत श्रेष्ठ ज्ञान रखते हैं, आप में इतनी सामर्थ्य है कि आप कुछ ऐसी बातें करें कि जो हंसाने वाली हों, और साथ ही जिन से कोई उत्तम शिक्षा भी मिल सके। अतएव कृपा करके कुछ ऐसी बातें कीजिए, कि जिन्हें सुनकर एक ओर जहां हमारा हृदय हास्य रस से भर कर कली की न्याईं खिल जाए, वहां दूसरी ओर हमारा मस्तिष्क भी किसी उच्च तत्व को देखकर श्रेष्ट ज्ञान लाभ करे। स्वामी जी ने उनके इस आवेदन को सुनकर कहा, कि बहुत अच्छा! आप लोग प्रस्तुत हों; मैं आपकी शुभ इच्छा के पूर्ण करने के लिए यत्न करूंगा। यह कह कर ज्ञान देव जी ने अपनी जेब से एक डिबिया निकाली, और उसे खोल कर उसमें से चार इंच लम्बी एक शलाका और एक सिन्दूर की पुड़िया बाहर की। पुड़िया में से उन्होंने कुछ सिन्दूर निकाल कर इस शलाका के दोनों सिरों पर लगाया, फिर धीरे धीरे होंठ हिलाकर कोई मंत्र पढ़ा, कि जिसको कोई और नहीं सुन सका। फिर उन्होंने एक काले बोर्ड के पास खड़े होकर और इस शलाका को हाथ में लेकर और एक एक को अपने पास बुलाकर और उसके सिर पर वह शलाका चार वार फेरकर, उसका नाम पूछना, और बोर्ड पर लिखना आरम्भ किया ।

जिन जनों ने इस प्रकार अपने अपने नाम बोर्ड पर लिखवाए, वह यह थे:-

(1) हलदी प्रसाद बी०ए०, बी०एल०, वकील हाईकोर्ट।

(2) जलेबी सिंह एम० ए०, हैडमास्टर हाईस्कूल।

(3) लडडू राम, डिप्टी कलेक्टर।

(4) धतूरा सिंह एम०ए०, मुन्सिफ।

(5) रतनजोत बी०ए०, एम०बी०, असिस्टेंट_सर्जन।

(6) केतकी प्रसाद, हैडक्लर्क।

ज्ञानदेव ने हलदी प्रसाद वकील के सिर पर एक बार फिर अपनी शलाका फेरी, और पूछा:-

(प्र०) आप कौन हैं?

(उ०) जनाब मैं तेली हूं।

(वकील साहिब का यह कहना था कि "मैं तेली हूं" और सब 'ह, ह, ह, ह,' करके खिखिला उठे, और बोले कि,"हमने समझा था, कि आप वकील हैं, और आपके बाप दादे ही तेल निकालने का पेशा करके तेली कहलाते थे; पर आपकी अक़ल के कुर्बान जाइए, कि, आप तेली का पेशा छोड़कर भी अपने आपको तेली कहते हैं।")

ज्ञानदेव ने जलेबी सिंह हेडमास्टर के सिर पर भी फिर अपनी शलाका फेरी और पूछा:-

(प्र०) आप कौन हैं?

(उ०) जनाब मैं सुनार हूं।

(हेडमास्टर जी का यह कहना था कि "मैं सुनार हूं" और वर्तमान जनों ने उनके इस उत्तर पर फिर उच्च हास्य किया। और कहा कि आप एक ऐसे जन के बेटे तो अवश्य हैं, कि जो सोने चांदी के ज़ेवर बनाता था और इसी लिए सुनार कहलाता था, पर आप हेडमास्टर होकर अपने आप को झूठ मूठ सुनार कहते हैं। शोक! आप एम०ए०, होकर इतनी समझ भी नहीं रखते कि आप अपने बाप की न्याईं यद्यपि सुनारी का काम नहीं करते, फिर भी अपने आप को सुनार कहते हैं।)

ज्ञानदेव ने डिप्टी लड्डू राम के सिर पर अपनी शलाका फेरी और प्रश्न किया:-

(प्र०) आप कौन हैं?

(उ०) मैं नाई हूं।

(डिप्टी साहिब के उत्तर देने पर कि "मैं नाई हूं" फिर कहकहा लगा और कई मुखों से यह शब्द निकला, वाह! डिप्टी साहिब आप हजामत तो अच्छी बनाते होंगे-भला, आपकी किसबत कहां है?)

ज्ञानदेव ने धतूरा सिंह मुन्सिफ के सिर पर भी अपनी शलाका फेरी और पूछा:-

(प्र०) आप कौन हैं?

(उ०) मैं तरख़ान हूं।

(मुन्सिफ साहिब के मुंह से यह सुनते ही कि "मैं तरख़ान हूं" सारे जन हंस पड़े, और एक ने कहा, कि सरदार साहिब किसी दिन हमारी चौकी की मुरम्मत भी कर जाना!)

इसके अनन्तर डाक्टर रतनजोत की बारी आई। इन पर भी ज्ञानदेव ने अपनी शलाका फेरी और उनसे पूछा:-

(प्र०) महाशय! आप कौन हैं?

(उ०) मैं मोची हूं।

आवाज़ आई; अच्छा! डाक्टर साहिब आप मोची हैं। जूतियां बनाते हैं। हमने समझा था कि असिस्टेंट सर्जन चिकत्सा का काम करते हैं!!(सब का उच्च हास्य।)

ज्ञानदेव ने केतकी प्रसाद हेडक्लर्क के सिर पर भी अपनी शलाका फेरी और पूछा:-

(प्र०) कहिए साहिब! आप कौन हैं?

(उ०) मैं-मैं-मैं बतला ही दूं? धोबी हूं, (हेडक्लर्क साहिब ने रुकते रुकते ज्यूं ही धीरे से यह कहा कि "मैं धोबी हूं" और सब वर्तमान जन तो हंस हंस कर लोटने लगे। किसी ने कहा कि दफ़्तर बैठे हुए आप कपड़ों पर स्याही मल कर कलम की चोट से कपड़े धोते होंगे।)

अभी हंसी का शब्द बन्द नहीं हुआ था कि ज्ञानदेव ने कहा, बस! अब हंसी हो चुकी। सुनो! और भली भान्त ध्यान दो! तुम लागों ने पढ़े लिखे होकर, बड़े बड़े विद्वान् कहला कर, यूनिवर्सिटी की डिगरियां लेकर "जात" की मिथ्या शिक्षा के अनुसार अपने अपने उत्तरों से जैसे एक ओर बुद्धिमत्ता के स्थान में मूर्खता का परिचय दिया है, और अपनी मूर्खता से एक दूसरे को हंसाया है, वहां अपने उत्तरों से शर्मसारी भी दिख्लाई है। तुम्हारे ऊट पटांग उत्तर और तुम्हारा लज्जित हो हो कर ऐसे उत्तर देना क्या तुम पर "जात" की झूठी प्रथा को

शेष पृष्ठ 2 पर

भौतिक जगत् के संबंध में एक जन ने ऐसा देखा है हमारे भगवान देवात्मा का देव रूप

भगवान देवात्मा का 55वां वर्ष

श्री देवगुरु भगवान के भीतर भौतिक जगत् के संबंध में जितने प्रबल उच्च बोध और अनुराग वर्तमान हैं, उनका प्रमाण उनके प्रतिदिन के जीवन की बहुत सी घटनाओं से सदा मिलता रहता है। और यदि इस प्रकार की कुछ वर्षों की घटनाएं भी लिपिबद्ध की जावें, तो केवल ऐसी कथाओं से ही एक बड़ी पुस्तक भर सकती है। इसीलिए यहां पर विविध घटनाओं का ज़्यादा ज़िकर करना छोड़कर केवल उन उन अंगों में से, कुछ का थोड़ा सा वर्णन किया जाता है, कि जिनमें श्री देवगुरु भगवान का भौतिक जगत् के साथ उच्चगति-मूलक अद्वितीय विशुद्ध संबंध एक मोटी दृष्टि और स्थूल बुद्धि रखने वाले को भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकता है। यथा:-

1. **परिष्कारता**- वह जिस किसी मकान में रहते हैं, चाहे उन्हें वहां थोड़े से दिनों के लिए हि रहना हो, और चाहे वह किराए आदि का हो, और चाहे उनका अपना हो, वह उसे निहायत साफ़ और सुथरा रखने की चेष्टा करते हैं। यहां तक कि जब किसी किराए आदि के मकान को छोड़कर भी जाना हो, तो उसे बहुत साफ़ और सुथरी अवस्था में छोड़कर जाते हैं। इस वर्ष में प्राय: दस बारह दिन उन्हें रावलपिंडी में किराए के एक मकान में रहने का अवसर हुआ। और उनके इस स्थान में निवास के कारण उसकी पहली मैली, काली और भेंडी अवस्था में इतना परिवर्तन आ गया, कि उसे मकान की मालिका देख देख कर अति विस्मित और प्रसन्न हो गई। फिर देवाश्रम में उनके अपने वासस्थान का प्रत्येक भाग तो जैसा साफ़ और सुथरा रहता है; और न केवल प्रत्येक प्रकोष्ठ और सेहन आदि का फ़र्श, किन्तु उन कमरों की वस्तुएं, दीवारें और द्वार आदि भी जैसी अत्यन्त साफ़ अवस्था में रहते हैं, उसका अनुमान किया जा सकता है।

2. **परिपाटी**- श्री देवगुरु भगवान के भीतर अपने गृह की सब वस्तुओं को परिपाटी में और अपने अपने ठिकाने पर रखने का बोध इतना प्रबल है, कि चाहे वह कैसे हि रोगी हों, अथवा चाहे उनके सिर पर कामों का कितना बड़ा बोझ हो, तो भी वह अपने सन्मुख किसी चीज़ को न सिर्फ़ मैली अवस्था में नहीं देख सकते, और क्या खाने के पात्रों, क्या वस्त्रों आदि और क्या अन्य पदार्थों का बहुत साफ़ अवस्था में ही उनके सम्मुख आना पसंद करते हैं, और मैली चीज़ से बहुत चिढ़ अनुभव करते हैं, किन्तु वह सदा कोशिश करते हैं, कि उनकी प्रत्येक वस्तु तरतीब और परिपाटी की अवस्था में पड़ी हुई हो और हर एक चीज़ अपनी नियत जगह पर रहती हो, उठाए जाने पर फिर भी वहीं रखी जाती हो, और कोई चीज़ अनाप शनाप और बेठिकाने न पड़ी हो। पिछले भौतिक व्रत में उन्होंने रोगी अवस्था में होकर भी जैसे अपने सारे मकान की सब वस्तुओं को आप बहुत परिश्रम करके परिपाटी में लाने का यत्न किया और कितने ही दिनों तक कई कई घंटे उस कार्य में देते रहे, वह इस बात का साक्षात प्रमाण था, कि वह अपने भीतर सफ़ाई और परिपाटी का कितना प्रबल अनुराग रखते हैं।

इसके भिन्न इसी नवंबर मास सन् 1904 में वह अति रोगी होने के दिनों में भी अपने खाने के पात्रों को जिस प्रकार अति साफ़ और सुंदर अवस्था में उनके सामने लाने की आज्ञाएं देते रहे हैं, और उसके विपरीत काम होने से जितना दुख अनुभव करते रहे हैं, उस से यह भली भांत प्रतीत होता था, कि कोई शारीरिक रोग वा खेद उनके अति प्रबल उच्च अनुरागों को कदापि मद्धम नहीं कर सकता।

3. सुंदर वस्तुओं का प्यार- भौतिक पदार्थों को साफ़ और परिपाटी में रखने के भिन्न श्री देवगुरु भगवान के भीतर सुंदर चीज़ों का प्यार अति प्रबल रूप में वर्तमान है। और विविध रंगों और उनके परस्पर मेल और अनमेल की पहचान की असाधारण आंख उनके भीतर मौजूद है, जिससे वह छोटी छोटी और सस्ती चीज़ों से भी अपने मकान को ऐसी उत्तम विधि से सुसज्जित कर लेते हैं, कि उसे देखकर आश्चर्य उत्पन्न होता है। और अनेक अवस्थाओं में बाज़ार की साधारण और सस्ती परन्तु artistic आंख के साथ चुनी और परिपाटी से रखी हुई वस्तुओं से उनका कमरा जैसा सुन्दर, सुसज्जित और शोभाप्राप्त अनुभव होता है, और जैसे उच्च प्रभाव डालता है, वैसे कितने ही अमीरों के बहुमूल्य पदार्थों से भरे हुए परन्तु परिपाटी और मेल विहीन कमरे ऐसा असर नहीं डालते। श्री देवगुरु भगवान प्रतिवर्ष अपने कमरे की ऐसी छोटी छोटी सुन्दर वस्तुओं को बढ़ाते और तबदील करते रहते हैं। इस वर्ष में भी कई ऐसी वस्तुएं उन्होंने ख़रीदीं और अपने कमरे में सजाई हैं।

4. परिवर्तन और उन्नति- श्री देवगुरु भगवान प्रतिवर्ष अपने वासस्थान और देवाश्रम के और भागों में कुछ न कुछ ऐसा परिवर्तन करते रहते हैं, कि जिस से वह पहले की अपेक्षा अधिक सुन्दर, अधिक सुखकर और अधिक काम में आने के योग्य बन जाता है। और यही कारण है, कि यदि कोई शख्स कुछ महीनों के पीछे भी आश्रम में आता है, तो वह उसके किसी न किसी भाग को पहले से बदला हुआ पाकर हैरान रह जाता है। और जैसे आत्माओं को बनाने अथवा उनके भीतर उच्च जीवन की इमारत खड़ी (Build) करने का अद्वितीय भाव श्री देवगुरु भगवान के भीतर प्रबल रूप से वर्तमान है, वैसे ही बाहर की इमारत बनाने का श्री देवगुरु भगवान के भीतर जितना भाव और शौक वा लग्न मौजूद है, उसका बयान नहीं हो सकता। उनके जीवन में कितनी बार ऐसी घटनाएं हुई हैं, कि जब वह विविध प्रकार की पीड़ाओं और रोगों में बहुत लाचार हो गए हैं, तो एक एक बार इमारत का काम शुरु करा देने और उसके बनवाने आदि से उन्हें बहुत लाभ वा आराम (relief) अनुभव होता रहा है। इस वर्ष में उन्होंने अपने वासस्थान में जो जो परिवर्तन किए हैं, वह यह हैं:-

(1) सामने की दीवार को गिराकर, उसके स्थान में कुछ आगे बढ़ाकर एक नई और सुन्दर दीवार बनाई गई है, जिस से एक कमरा और दो स्नानगृह पहले से बड़े और छत पर का सेहन ज़्यादा कुशादा हो गया है। और एक बरामदे का एक कमरा बन गया है। पहली छोटी सी बैठक को गिराकर भी उपरोक्त सेहन में शामिल किया गया है। एक नए कमरे को बैठक के लिए नियत किया गया है। एक नया रसोई घर बनाया गया है। और पहले रसोई घर को बदलकर उसमें स्मृति-रक्षक वस्तुएं रखी गई हैं। पुराने पारिवारिक साधन मंदिर के स्थान में एक नया साधन मंदिर बनाया गया

है, और पहले मंदिर को रहने के कमरे में बदला गया है। पहले आश्रम के सेहन में जो सीढ़ियां ऊपर को जाती थीं, उन्हें गिराकर नई और बहुत अच्छी सीढ़ियां बनाई गई हैं, कि जिनसे तीन तरफों को रास्ता निकल जाता है। एक स्नानगृह को बढ़ाकर दो भागों में विभक्त किया गया है। तीन चौबारों के सामने एक लकड़ी का बुख़ारचा बन रहा है, कि जिससे उनके सौंदर्य के बढ़ जाने के भिन्न उनमें से प्रत्येक के लिए जुदा जुदा रास्ता भी बन जाएगा। इन चौबारों के नीचे एक कमरे में पहले केवल काठ कबाड़ पड़ा रहता था, अब उसमें सफ़ाई और सफेदी आदि कराके उसे वास योग्य किया गया है। ऊपर के चौबारों के कई मुंढेर भूचाल से हिल गए थे, वह फिर से बनवाए गए हैं। इत्यादि।

इसके भिन्न उनकी आज्ञा से आश्रम में और भी कई परिवर्तन हुए हैं, जिनमें से मोटे मोटे यह हैं:-

सामाजिक जनों के धर्म साधनों के लिए प्रचार हाल की गैलरी और देव समाज धर्म विकासालय के लिए सदर दरवाज़े की ड्योढ़ी का चौबारा नियत किया गया है। प्रचार हाल के कोने की बुरज़ी बनाई गई है। उसकी मुंडेर जो भूचाल से हिल गई थी, नई और अधिक सुन्दर बनाई गई है। आश्रम के सेहन का पानी का नलका बदला गया है, और उसे एक और तरफ जमाया गया है। किराएदारों वाले हिस्से में एक नया रसोई घर बना है, और विविध कमरों के अन्तर के पर्दे जो पहले छतों तक नहीं थे, वह छतों तक किए गए हैं। और उन मकानों में जलपात्र रखने के अच्छे स्थान बनाए गए हैं। और सामने की सारी दीवारों की मुंडेरों को ऊंचा और पुख़्ता किया गया है। इत्यादि इत्यादि।

5. वस्तुओं का परस्पर सम्बन्ध- श्री देवगुरु भगवान के भीतर यह बोध बहुत प्रबल है, कि किसी एक चीज़ को बनाते वा संवारते समय जहां तक सम्भव है किसी दूसरी वस्तु को हानि न पहुंचे। किसी चीज़ को साफ़ करते समय अथवा उसे उठाते धरते समय अथवा कहीं से गुज़रते समय वा किसी चीज़ को वहीं से गूज़ारते समय, जब कोई जन किसी चीज़ को हानि पहुंचा देता है, तो उन्हें उससे बहुत दुख प्राप्त होता है और एक एक ऐसी घटना से उनके हृदय पर बहुत आघात लगता है। इस वर्ष में भी ऐसी कई घटनाओं में उनके इस उच्च बोध का परिचय मिलता रहा है, जिनमें से एक जन का छत के ऊपर से एक हरमेंटीडोट पंखा उतारते समय उनके बरामदे के जंगले के लकड़ी के डंडों का तोड़ देना और उससे श्री देवगुरु भगवान को अति दुख प्राप्त होना एक वर्णनीय दृष्टान्त है।

6. चीज़ों को संभाल कर रखना- श्री देवगुरु भगवान अपने व्यवहार की वस्तुओं को बहुत संभाल कर रखते हैं। और कदापि ऐसा पसन्द नहीं करते, कि उनकी कोई वस्तु उचित समय से पहले टूट फूट जाए, वा निकम्मी हो जाए। उनके पास एक एक वस्त्र, एक एक बरतन, एक एक कलम और दवात और चाकू आदि कितने कितने वर्षों से हैं। परन्तु इस अंग में सबसे बढ़कर और आश्चर्य दृष्टान्त उनकी जेबी घड़ी है, कि जो इन्होंने 1892 में केवल 8½ रुपए में मोल ली थी, और तब से वह उसे बराबर प्रति दिन काम में लाते रहे हैं। इस अर्से में उन्होंने बहुत सी बार और हज़ारों मीलों में सफ़र किए हैं। कितने मकान और स्थान बदले हैं, और प्रतिदिन उसे चाबी दी और उससे दिन रात में काम लिया है, परन्तु इस 13 वर्ष के लम्बे काल में सिवाय शुरु शुरु

में दुरुस्त और एक आध बार मामूली सफ़ाई और एक नया शीशा लगवाने आदि के वास्ते घड़ीसाज़ के पास जाने के उसे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंची। इस से पहले एक घड़ी उनके पास 12 साल तक रही थी।

7. अपव्यय से घृणा - एक ओर श्री देवगुरु भगवान धन आदि के मोह से इतने ऊपर हैं, कि ज़रूरत पड़ने पर वह सैंकड़ों और हज़ारों रुपए ख़र्च वा नुकसान आदि की परवाह नहीं करते, और एक एक समय आवश्यक होने पर मानो पानी की तरह रुपया ख़र्च कर देने के लिए तैयार रहते हैं। उधर दूसरी तरफ वह एक पैसा भी व्यर्थ खोना पसन्द नहीं करते। और जब कोई जन यथार्थ आवश्कता से कुछ भी अधिक चीज़ यूं ही खरीद लाता है, अथवा कोई निकम्मी चीज़ ले आता है, तो चाहे वह चीज़ कोई उन्हें मुफ़्त भी उपहार में देता हो, तो भी वह उसके विपय में यथावसर अपनी अप्रसन्नता प्रगट करने के बिना नहीं रहते और यदि कोई उनके दाम से ऐसा करे, तो वह यह अनुभव करते और ऐसा ही सदा प्रगट करते है, कि गोया उन्हें उस कदर लूट लिया गया है, वा उनका धन अपहरण किया गया है। यहां तक कि वह हाथ साफ़ करते समय मट्टी तक भी आवश्यकता से अधिक बर्तना वा तोड़ फोड़ कर फैंक देना कभी गवारा नहीं करते।

8. ज्ञानोपार्जन - श्री देवगुरु भगवान सदैव विविध भौतिक पदार्थों और रासायनिक वस्तुओं के विपय में अपने ज्ञान को बढ़ाने की चेष्टा करते रहते हैं। विशेषत: जो भौतिक पदार्थ मनुष्य के खाद्य पदार्थों में शामिल होकर उसके भीतर बल और स्वस्थता की उत्पति और वृद्धि, अथवा रोग की उत्पत्ति का हेतु बन जाते हैं, उनके विपय में उनका ज्ञान कितने ही अंशों में अच्छे अच्छे डाक्टरों की अपेक्षा भी अधिक और अच्छा है।

(जीवन पथ मार्गशिर 1962 वि० से साभार)

भौतिक जगत है अति महान...

(भौतिक जगत के संबंध में गीत)

भौतिक जगत है अति महान, उस पर निर्भर हमरे प्राण।
सूरज चंद्र और सितारे, इसी जगत के हैं अरकान,
जलवायु और अग्नि मिट्टी, देता है यह जगत महान। 1

लोहा, चांदी, सोना, हीरे, इसी जगत का है सब दान,
उद्भिद पशु मनुष्य जगतों का, यही जगत आश्रय स्थान। 2

अधिक से अधिक अभिलाषी होकर, लाभ करें हम इसका ज्ञान,
पालें कर्त्तव्य वर्जित आज्ञा, देते हैं जो गुरु भगवान। 3

सीखें सद्व्यवहार हम इसका, लाभ करें आत्म कल्याण,
भौतिक जगत है अति महान, उस पर निर्भर हमरे प्राण। 4

देव समाज ग्लोबल सामाजिक समाचार

सत्यधर्म बोध उत्सव

(मल्लेका सिरसा)

इस बार सत्यधर्म बोध उत्सव मल्लेका, सिरसा में मनाया गया। स्थानीय धर्म संबंधियों के अतिरिक्त डेरा बस्सी, पंचकूला, चण्डीगढ़, हिसार, गोनियाना, बठिंड़ा, कल्याण, गंगानगर, गजसिंहपुरा, पदमपुर आदि स्थानों से धर्म संबंधी पधारे। सभाओं में हाज़री 70-75 होती रही। ठहरने और खाने का प्रबंध श्रीमान सुखदेव सिंह जी मल्लेका के घर पर होता रहा। एक दिन श्रीमान् अजीत सिंह जी और श्रीमान् मेहर सिंह जी ने धर्म संबंधियों को अपने घर पर विशेष आमन्त्रण देकर चाय नाश्ता करवाया। भजनों का गान श्रीमान गौतम जी और श्रीमान गुरदेव राज जी करते रहे।

17.09.21 शाम 4.30 बजे प्रवेश सभा

यह सभा श्रीमान् बलबहादुर सिंह जी द्वारा कराई गई जिसमें उन्होंने सत्यधर्म की विशेषता बताई। उन्होंने बाहर से आए हुए यात्रियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि आत्मा की होश पाने के लिए यह उत्सव मनाया जा रहा है। हम केवल शरीर नहीं, आत्मा भी हैं। पौधों, पशुओं और मनुष्यों में भिन्न भिन्न प्रकार की जीवनी शक्तियां हैं। मनुष्य होकर अपने अस्तित्व का ज्ञान होना तो अत्यावश्यक है ही, इससे आगे भी हमें अपनी आत्मा की दुश्मन शक्तियों को भी जानना है। श्रीमान जी ने उपस्थित धर्म संबंधियों को प्रेरित किया कि वे यहां से उच्च प्रेरणाएं लेकर जाएं। हमारी प्रत्येक सोच तथा क्रिया से आत्मा में परिवर्तन आता है। अपनी इसी आत्मा के परिवर्तन को जानना केवल सत्यधर्म के प्रभावों से संभव है। सभा बहुत प्रभावशाली थी।

18.09.21 सुबह 9.00 बजे

सभापति श्रीमान राधे शाम जी। श्रीमान् जी ने बताया कि पूजनीय भगवान ने हमें संबंधों की शिक्षा दी है। आज हम अपने संबंध में स्वास्तित्व अर्थात अपने आपको जानने के लिए सत्यधर्म बोध उत्सव मना रहे हैं। उन्होंने बताया कि ज्ञान से जीवन की रक्षा नहीं होती बल्कि बोध से होती है। उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि कैसे अबोधता से हानियां होती हैं।

दूसरी सभा

इसके साथ ही दूसरी सभा की गई जिसका विषय था: स्वास्तित्व संबंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या। यह सभा श्रीमान् गौतम जी ने करवाई।

तीसरी सभा शाम 4.30 बजे

इसका विषय था भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का अद्वितीय कारज। इस सभा के सभापति श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान ने मिथ्या मतों की तुलना में भगवान के देव प्रभावों के अद्वितीय कारज की व्याख्या की।

19.09.21 पहली सभा

भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने दृष्टांत देकर भगवान के नीच जीवन मिटाने के कारज को बहुत प्रभावशाली ढंग से पेश किया। सभा के अंत में मिष्ठान भी बांटा गया। सभा में 7400/- रूपए दान प्राप्त हुआ। यह उत्सव बहुत प्रभावशाली रहा और यात्रियों ने अपनी योग्यता के अनुसार बहुत लाभ उठाया।

बच्चों का कॉर्नर

भगवान देवात्मा के जीवन से - 4

एक असहाय अनाथ अंधे भिखारी के प्रति दया भाव

मोगे में 1902 के महाव्रत के शुभ अवसर पर एक दिन दोपहर के वक्त एक अन्धा भिखारी लाठी पकड़े हुए आ पहुंचा। उस समय स्कूल के आंगन में देव समाज के कर्मचारी और सेवक और श्रद्धालु आदि बहुत से जन विराजमान थे, मगर किसी सेवक के दिल को उस असहाय की सच्ची ज़रूरत ने नहीं हिलाया। थोड़ी देर इधर उधर फिरने के बाद वह अनाथ भिखारी वहां से निराश होकर चल पड़ा। उसी समय हम सबके जीवनदाता श्री देवगुरु भगवान् भी अपने निवास स्थान में खड़े हुए इस दुखदाई दृश्य को देख रहे थे और जानना चाहते थे कि कोई सेवक उस कृपापात्र की अवस्था को अनुभव करके और तो और इस शुभ दिन में ही उसके लिए कुछ करना चाहता है! शोक! कि जब किसी ने उसकी ओर ध्यान न दिया, तो उस समय जहां जीवनदाता को अपने सेवकों आदि की इस अवस्था पर बहुत दुख हुआ, वहां वह दीनदयालु कि जो हर एक मनुष्य के साथ अपना संबंध अनुभव करते हैं, और जो जीवनतत्व के विचार से सैंकड़ों अंध आत्माओं को ज्योति दान देकर उनका शुभ करते हैं, वह इस अंधे को अन्न दान देकर उसकी प्रार्थना को पूर्ण करने के बिना क्योंकर रह सकते थे? नहीं रह सकते थे, इसीलिए उन्होंने अपने एक पुत्र को बुलाकर उसके लिए दौड़ाया और उसे आदर पूर्वक बुलाकर भोजन और कुछ नकद दान किया, और वह अनाथ भिखारी ऐसे दया सागर के दयावान् हृदय को अपने दिल दिल में धन्य धन्य कहता हुआ चला गया।

इसके बाद जब श्री देवगुरु जी ने अपने कर्मचारियों और सेवकों पर उस अंधे के संबंध में इस प्रकार की शोचनीय अवस्था प्रगट की, तो उस से सब सेवक आदि बहुत लज्जित हुए।

मज़ेदार बूझो तो जानें

1. अपनों के ही घर यह जाए, तीन अक्षर का नाम बताए, शुरू के 2 अति होजाएं, अंतिम 2 से तिथि बताएं?
2. बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती है गोली, बच्चे बूढ़े डर जाते सुन कर मेरी बोली?
3. एक पहेली में बुझाऊं, सिर को काट नमक छिड़काऊं?
4. खाते नहीं चबाते लोग, काट में कड़वा रस संयोग, दांत जीभ की करें सफाई, बोलो बात समझ में आई?
5. चार ड्राईवर एक सवारी, उसके पीछे जनता भारी?

उत्तर : 1. अतिथि 2. बंदूक 3. खीरा 4. दातुन 5. अर्थी

एक नेवले और जट्टी की कहानी

भगवान देवात्मा द्वारा रचित कथा संग्रह पाठ बोध से उद्धृत जिसे अमृत की बूंदे नाम से प्रकाशित किया गया है

एक जाट एक दिन हल जोत रहा था। खेत की मेंड में उसे एक बिल दिखाई दिया। इस बिल में नेवले के एक जोड़े ने बच्चे दिए थे। इन बच्चों में से एक ने ज्यों ही अपना सिर ऊपर को निकाला, त्यों ही जाट ने झपट कर उसे पकड़ लिया। जाट ने इस बच्चे को अपने साथ घर में ले जाकर पालना आरम्भ किया। थोड़े दिनों में नेवला पलकर बड़ा हो गया।

एक दिन जाट बाहर खेत पर काम कर रहा था, और उसकी स्त्री अपने नन्हे बच्चे को छोटी चारपाई पर सुलाकर पानी भरने के लिए बाहर गई थी; इतने में एक सांप निकला और रेंगता रेंगता बच्चे के पास पहुंचा। अभी सांप ने बच्चे को काटा नहीं था, कि नेवले ने उसे देख लिया, और झट उसके गिर्द हो गया। दोनों की लड़ाई आरम्भ हुई, और थोड़ी देर में नेवले ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। सांप मर गया, परन्तु उसके लहू से ज़मीन लाल हो गई।

जट्टी पानी का घड़ा सिर पर रखे हुए घर को लौटी। देखती क्या है, कि सामने की भूमि पर बहुत रुधिर (खून) पड़ा हुआ है। "हैं! यह रुधिर कहां से आया! हो सकता है कि इस नेवले ने मेरे बच्चे को मार कर खा लिया है!!" यह सोचते ही उस ने प्रतिशोध से उत्तेजित होकर पानी का भरा हुआ घड़ा नेवले के सिर पर पटक दिया, जिसकी भयानक चोट से नेवला उसी समय मर गया।

फिर जब जट्टी यह शब्द बुड़बुड़ाती हुई "तूने जैसा किया वैसा फल पाया" आगे बढ़ी, तो क्या देखती है कि बच्चा ज्यों का



त्यों चारपाई पर सोया हुआ है और उसके पास सांप के कई टुकड़े पड़े हुए हैं। "ओह! यह क्या हुआ!! मेरे अच्छे नेवले ने तो मेरे बच्चे की सांप से रक्षा की; मारा नहीं, उल्टा अपनी जान पर खेलकर उसकी जान बचाई!! हाय! मैंने जल्दी में आकर उसी का खून कर दिया!!! मैंने कैसा पाप किया! मैंने भलाई के दबले कैसी बुराई की!" यह सोच सोच कर जट्टी बहुत रोई। परन्तु अब क्या हो सकता था। भली भांति विचार करने के बिना, घबराहट से जो काम किया जाता है, उसका परिणाम प्राय: अच्छा नहीं होता।

उपदेश

भली भांति सोच विचार कर और आवश्यकता के अनुसार योग्य जनों से परामर्श लेकर काम करना अच्छा होता है। बिना विचार करने के केवल आतुर होकर काम करने से वह खराब हो जाता है।

किसी ने क्या अच्छा कहा है:-

"बिना विचारे जो करे, सो पीछे पछताय;
काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हंसाय।"

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

ज़रा हँस लो खिल खिलाकर

1 चप्पू : पापा, मुझे डीजे खरीदकर दीजिए ना!
पापा : नहीं दूंगा, तू लोगों को तंग करेगा।
चप्पू : नहीं, मैं किसी को तंग नहीं करूंगा, जब सब सो जाएंगे तब मैं बजाऊंगा।

2. जो बुखार में भी काम करे वह होता है व्यापारी, और जिसे काम देखकर दुखार आ जाए वह सरकारी कर्मचारी।

3. भिखारी : रोटी ही खिला दो....
पप्पू : टमाटर खाओ।
भिखारी : टमाटर ही दे दो।
पप्पू : टमाटर खाओ।
तभी पप्पू का दोस्त पोंचू बोला- अरे, यह तोतला है, कह रहा है कमाकर खाओ।

4. यात्री ट्रेन से उतरा, उसने संता से पूछा- यह कौन सा स्टेशन है?
संता हंसा, और ज़ोर से हंसा, ज़ोर-ज़ोर से हंसा, हसते-हसते लोट पोट हो गया... और बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभालते हुए बोला-पगले ये रेलवे स्टेशन है।

5. एक आदमी स्कूटर पर बैठ कर पिक्चर हाल के सामने संता से पूछ बैठा..
आदमी : भाईसाब, स्कूटर स्टैंड कहां है?
संता : भाईसाब, पहले आप अपना नाम बताइये?
आदमी : रमेश!
संता : आपके माता पिता क्या करते हैं?
आदमी : क्यों? वैसे भाईसाब मैं, लेट हो जाऊंगा और पिक्चर शुरू हो जाएगी।
संता : तो जल्दी बताओ??
आदमी : मेरी मां, एक डॉक्टर है और मेरे पिता जी इंजीनियर हैं। अब बता दीजिए?
संता : आपके नाम कोई ज़मीन जायजाद है?
आदमी : हां, गांव में एक खेत मेरे नाम है? प्लीज़ भाईसाब अब बता दीजिए स्कूटर का स्टैंड कहां है?
संता : आखिरी सवाल, तुम पढ़े लिखे हो?
आदमी : जी हां! मैं MBA कर रहा हूं। अब बताइए जल्दी से।
संता : भाईसाब, देखिए आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि इतनी अच्छी है, आपके माता पिता दोनों उच्च शिक्षित हैं, पर मुझे अफ़सोस है कि आप इतनी सी बात नहीं जानते कि.... स्कूटर का स्टैंड स्कूटर के नीचे लगा होता है।

श्रीमान् बलदेव सिंह जी, एम.ए., (लाईफ वर्कर) मंत्री - Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिसर और मालिक "धर्म जीवन" ने Collective Printers, Chandigarh. Mob. 9814868502 से छपवाकर म.नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Post